Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

अग्रोहा एक अनमोल राष्ट्रीय धरोहर

पंकज

सहायक प्रोफेसर, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा(हरियाणा)।

शोध–सार

भारत में असंख्य पुरातात्विक व ऐतिहासिक महत्व के स्थल हैं जिन पर उत्खनन कार्य काफी हद तक हो चुका है और कुछ जारी है। भारत की संस्कति व सभ्यता जितनी प्राचीन व समृद्ध है उतनी अनोखी भी रही है। हर एक पुरातात्विक स्थल की अपनी एक गाथा है, एक समृद्ध इतिहास संजोए हुए हैं। उनमें से हरियाणा प्रांत के हिसार जिले में स्थित महाराज अग्रसेन जी की राजधानी माने जाने वाले अग्रोहा भी एक है। यह ना केवल हरियाणा की बल्कि भारत और विश्व की एक अनमोल राष्ट्रीय धरोहर के रूप में जानी जाती है। भले ही आज अग्रोहा अग्रवाल समाज के लिए एक तीर्थ स्थल हो और अपने धाम के रूप में प्रसिद्ध हो, लेकिन अग्रोहा की अपनी एक ऐतिहासिक विकास यात्रा रही है। अग्रोहा की ऐतिहासिकता इसकी पुरातात्विक खुदाई में मिली, बस्तियों, खंडित भावनों और सिक्कों से साबित होती है, जो सातवीं शताब्दी ईस्वी पूर्व से चौदहवीं शताब्दी ईस्वी तक के निरंतर निवास और एक समृद्ध गणराज्य के रूप में इसके महत्व को दर्शाते हैं। अग्रोहा को हरियाणा के दो प्राचीन गणराज्यों अग्र व यौधेय की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। साथ ही पौराणिक कथाओं के अनुसार, यह स्थान अग्रवाल समुदाय के संस्थापक गणराज अग्रसेन की महाराज अग्रसेन की राजधानी था तथा व्यापारिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध रहा। अग्रोहा ऐतिहासिकता व धार्मिकता का अनूठा संगम है। वर्तमान अग्रोहा धाम का न केवल एक पवित्र धार्मिक स्थल है बल्कि यह अग्रवाल समाज की उत्पत्ति, भारत की प्राचीन सभ्यता और समृद्ध संस्कृतिक धरोहर का अद्वितीय प्रतीक भी है। यह क्षेत्र श्रद्धालुओं, पर्यटकों, शोधकर्ताओं, पुरातत्वविदों, इतिहास प्रेमियों के लिए समान रूप से आकर्षण का केंद्र बन चुका है। अग्रोहा थेह/टीले की खुदाई ने कई रहस्यों को उजागर किया है। यहां का प्राचीन नगर व उनमें निर्मित भवन/इमारतें जो अब खंडित अवस्था में हैं स्थापत्य कला की अद्भुत नमूने रहे हैं। परंतु अग्रोहा को राष्ट्रीय धरोहर के रूप में वह स्थान नहीं मिल पाया जिसका वह हकदार है। प्रस्तुत शोध–पत्र का प्रमुख उद्देश्य अग्रोहा क्षेत्र के समृद्ध इतिहास व लोक परम्परा के कई अनछुऐ पहलुओं को, इसके महत्व व पहचान को व्यापक स्तर पर उजागर करना है।

विशेष बिंदु: अग्र, अग्रोहा, अग्रसेन, अग्रवाल, नगर स्थापत्य, थेह, यौधेय आदि।

1.भूमिका:

अग्रोहा दिल्ली से लगभग 200 किलोमीटर दूर हरियाणा के महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय राजमार्ग पर हिसार जिले में स्थित है। वर्तमान में भारत के एक प्रांत हरियाणा के स्थान हिसार जिले से लगभग 22 किलोमीटर उत्तर–पश्चिमी स्थित अमरोहा जो महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल तथा स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए प्रसिद्ध है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसकी बहुआयामी महता है, क्योंकि यह राजनीतिक, धार्मिक व सांस्कृतिक दृष्टि से कई परिवर्तनों के दौर से गुजरा है। इसका मुख्य टीला भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अधीन है जिसके ठीक सामने मेडिकल कॉलेज है, टीले से सटा हुआ पर्यटन स्थल है।तीर्थ स्थान है जिसका रखरखाव 1976 में स्थापित अग्रोहा विकास ट्रस्ट के पास है, जो निरंतर इसके विकास की ओर कार्यरत है। अग्रोहा की ऐतिहासिकता के साथ–साथ पौराणिकता सीधे जुड़ी है महाराजा अग्रसेन से, जो अग्रवाल समुदाय के संस्थापक माने जाते हैं। पर्यटन स्थल के साथ ही आबादी क्षेत्र तथा

इससे जुड़ी संस्थाएं हैं। टीलेसे लेकर आदमपुर–बरवाला चौक स्थित इस क्षेत्र ने ऐतिहासिक रूप में निरंतर उतार–चढ़ाव देखे हैं।

भारतीय समाज कबीले से बस्तियों में स्थापित हो रहा था, जो बाद में गौत्र, वर्ग, जातियों के रूप में सभ्यता का आधार बना, उस समय अग्रोहा भी इस प्रक्रिया में शामिल था। अग्रोहा के निर्माण, विकास तथा पुनर्निर्माण की प्राचीन काल से लेकर अब तक एक ऐतिहासिक साक्षी रही है तथा इसकी दृष्टि कई इसकी पुष्टि कई प्रमाणित स्त्रोत करते हैं। अग्रोहा का प्राचीन इतिहास हर दृष्टि से समृद्ध रहा है, मध्यकाल में अंधकारमय रहा और ब्रिटिश काल में भी इस पर ध्यान नहीं दिया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के कई वर्ष बाद इसका पुनरुद्धार शुरू हुआ और लोकधारा/मान्यताओं के चलते एक धार्मिक/पर्यटक स्थल के रूप में प्रसिद्ध होने लगा हालांकि पुरातात्विक टीले की खुदाई ने इसकी ऐतिहासिकता व प्राचीनता को सिद्ध कर दिया था लेकिन वह कार्य अधूरा रहा तथा जब यह कार्य फिर से शुरू हो गया तो अग्रोहा को अग्रोहा धाम के साथ–साथ ऐतिहासिक दृष्टि से देखना आवश्यक है ताकि यह भारत की अनमोल राष्ट्रीय धरोहर में शामिल हो सके जो ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है।

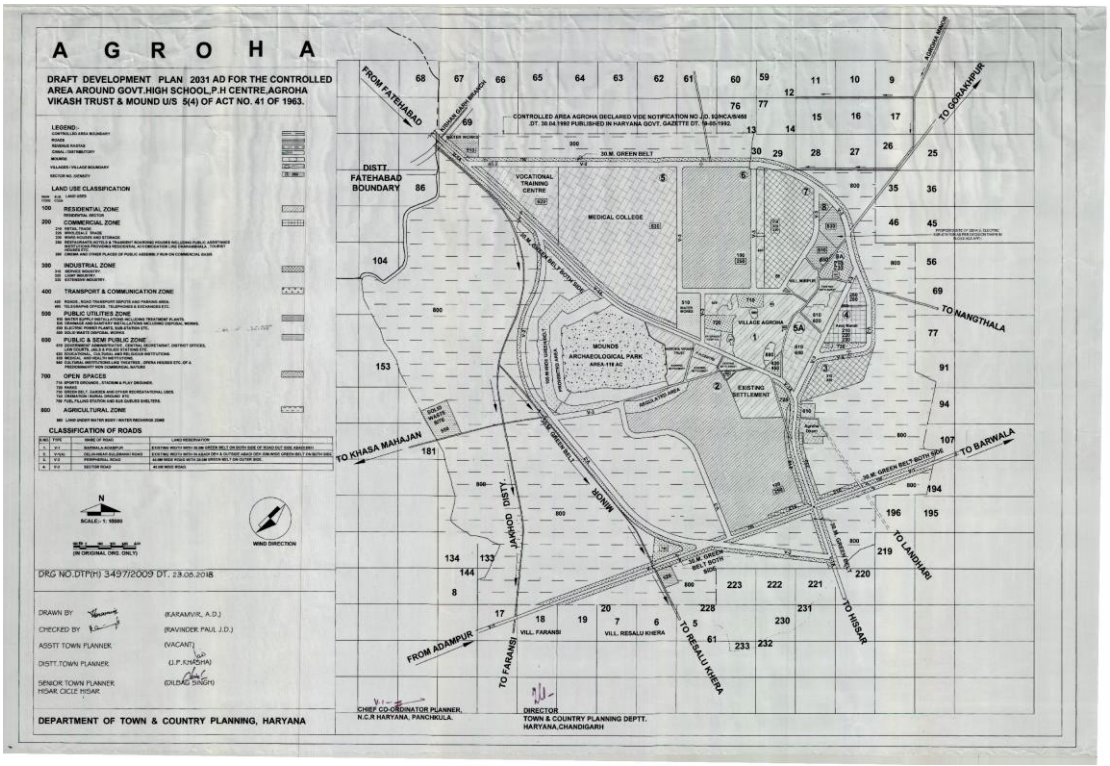

2. स्त्रोत व ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः–

इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए उपयोगी सामग्री बहुत कम मिलती है। अग्रोहा भी इनके उनसे अछूता नहीं है। प्राचीन भारतीय साहित्य में ऐसे ग्रन्थों का प्रायः अभाव रहा है जिनमें अग्रोहा का क्रमागत इतिहस मिला हो। तथापि इसका अर्थ यह नहीं है कि भारतीयों में ऐतिहासिक चेतना का अभाव था। प्राचीन ग्रंथो के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यहां के निवासियों को अति प्राचीन काल से ही इतिहास बुद्धि विद्यमान रही। इस प्रकार यदि इसे सावधानीपूर्वक अपने विशाल साहित्य की छानबीन करें तो उसे हमें अग्रोहा के इतिहास के पुनर्निर्माणार्थ अनेक महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होगी। साहित्यक ग्रन्थों के साथ भारत में समय–समय पर विदेशों से आने वाले यात्रियों के भ्रमण–वृतांत भी अग्रोहा के इतिहास, विषय–वस्तु अनेक उपयोगी सामग्रियां प्रदान करते हैं। इधर पुरातत्ववेताओं को अग्रोहा के अतीत के खंडहरों से अनेक ऐसी वस्तुएं खोज निकाली हैं जो हमें अग्रोहा के प्राचीन इतिहास संबंधी बहुमूल्य सूचनाएँ प्राप्त कराती हैं। साथ में इस क्षेत्र में चल रही लोकधारा/लोक जागृति भी कुछ न्यूनाधिक इसके इतिहास पर प्रकाश डालती हैं। इस प्रकार स्त्रोत के अध्यापन की अपनी शैली होती है तथा उसका अपना एक सकारात्मक व सार्थक पक्ष होता है तथा उसकी कई सीमाएं भी होती हैं। इन विभिन्न प्रकार के स्रोतों को

मिलाकर एवं तुलनात्मक अध्ययन कर किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है। इस तरह से अग्रोहा के गौरवशाली इतिहास को चार प्रकार के स्रोतों से जान सकते हैं। अग्रोहा के बारे में सर्वाधिक महत्वपूर्ण जानकारी पुरातात्विक है जो इसके टीले के उत्खनन के साथ जुड़ी है। जिसे सर्वप्रथम 1888–89 में सी.टी. रोजर्क ने खोजा तथा इसके ऐतिहासिक पक्ष के स्वरूप उजागर को होना आश्य दिये। 1988–89 में एच.एल. श्रीवास्तव ने खनन के कार्य को आगे बढ़ाया तथा न केवल रोजर्स क निष्कर्षों की पुष्टि की बल्कि काफी कुछ नया भी प्रकाश किया। 1881–82 में जे.एस. खत्री ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के आदेशानुसार यहां कार्य किया जिसमें 141 एकड़ में फैली विस्तृत टीले की खुदाई की। इस खुदाई की रिपोर्ट अधिकारिक रूप से प्रकाशित नहीं हुई। परंतु खनन काल में प्रकाशित जानकारी, इस टीम के सदस्यों द्वारा दी गई जानकारी तथा स्थानीय लोगों में जो इसमें शामिल हुए, ने स्पष्ट किया कि यह बहुत समृद्ध सभ्यता को अभिव्यक्त करता है।

टीले की लंबवत खुदाई 39 फीट तक हुई जिसमें स्पष्ट किया है कि यहां अलग–अलग काल में तीन सभ्यताएं रही। पहले ऊपर परत लगभग 1000 वर्ष पहले के जीवन पर प्रकाश डालते है, जो भेद सामान्य है। इसकी दूसरी परत 300 ई से 3000 ई. पू. की जानकारी देती है जो यहां पर गणों के होने की पुष्टि करती है जबकि तीसरी परत प्रायः बौद्ध धर्म से संबंधित जानकारी देती है जिसमें कुछ प्रमाण जैन धर्म के सन्दर्भ में भी हैं। इसकी दूसरी व तीसरी परत में कहीं–कहीं सामग्री का मिश्रण भी है जो इस ओर संकेत करता है कि यहां दोनों कालों के लोगों के बीच समन्वय सहयोग भी रहा हो। इसी काल की जानकारी यशपाल के धार्मिक साहित्य व विदेशी यात्रियों के वृतांत से भी जुड़ती है। इन तीनों तरह की जानकारी के आधार पर स्पष्ट होता है कि अग्रोहा में बौद्ध व जैन धर्म की गतिविधियां भी हुई तथा दो गणराज्य यौधेय व अग्र की राजधानी रहा। प्राचीन काल के बाद भी विभिन्न प्रकार के ऐतिहासिक साहित्य व अन्य दस्तावेज मिले में अग्रोहा का वर्णन आता है जबकि अग्रोहा को महाराजा अग्रसेन से जोड़ती सामग्री अधिकतर लोकगाथा पर आधारित है। प्राचीन काल से लेकर समकालीन परत तक स्रोतों के स्वरूप के आधार पर मुख्यतः चार भागों में विभाजित कर सकते हैं।

3. प्राचीन कालीन अग्रोहाः 3.1 राजनीतिक इतिहास

3.2 आर्थिक इतिहास

3.3 सांस्कृतिक व धार्मिक इतिहास

(कला व स्थापत्य कला)

4. मध्यकालीन तथा ब्रिटिश कालीन अग्रोहा

5. लोकधारा/लोकचिंतन में अग्रोहा

6. समकालीन अग्रोहा

3. प्राचीन कालीन अग्रोहा:–अग्रोहा के प्राचीन काल की जानकारी का आधार प्रायः पुरातात्विक सामग्री है जो टीले की खुदाई में प्राप्त हुई थी। इसी कालखंड के समकालीन साहित्य स्रोतों में महाभारत के वन पर्व में कुरु वंश के स्रोतों को तीन हिस्से में बाँटा है जिसमें कुरु पंचाल का वर्णन है, जिसके चार जनपदों में एक अग्रोहा है। इसी तरह कुछ बौद्ध साहित्य व यूनानियों के साहित्य में भी अग्रोहा उभरकर सामने आता है। जिस से स्पष्ट होता है की छठी शताब्दी ई. पू. से ही यहां सभ्यता के विकास सम्बन्धित प्रमाण मिलते हैं। इन स्रोतों के आधार पर कई पहलू दृ ष्टिगोचर होते हैं जिन्हें राजनीतिक इतिहास, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, स्थापत्य कला इतिहास में बाँट कर समझा जा सकता है।

3.1 राजनीतिक गतिविधियां: गणतंत्रों का अभ्युदय

प्राचीन भारत के इतिहास की कई घटनाओं में एक घटना यह रही है कि प्राचीन भारत में केवल में राजतन्त्र ही थे परन्तु बाद की खोजों से यह तथ्य प्रकाश में आया कि प्राचीन भारत के राजतंत्रों के साथ–साथ गण अथवा संघ राज्यों का भी अधिपत्य था। सर्वप्रथम 1903में रिज डेविडस ने साम्राज्यवादी दृष्टिकोण को चुनौती देने के लिए गणराज्यों की खोज की थी। प्राचीन भारतीय साहित्य के अतिरिक्त यूनानी लेखकों के विवरण से भी प्राचीन भारत में गणराज्यों का अस्तित्व प्रमाणित हो जाता है। इससे सूचित होता है कि सिकंदर के आक्रमण के कारण के समय पंजाब तथा सिंध में कई गणराज्य थे जो राजतंत्रों से भिन्न थे। गुप्त प्र माणों से भी गणराज्य का अस्तित्व प्रमाणित हो चुका है। इन्हीं गणराज्यों में से यौधेय गणराज्य थे। हरियाणा के हिसार जिले में स्थित अग्रोहा राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा। इन गणराज्यों की समान व्यवस्था में कोई एक व्यक्ति या परिवार पैतृक आधार पर नेतृत्व नहीं देता था बल्कि कबीलाई आधार पर लोग आपस में मिलकर शासन व्यवस्था चलाते थे। ये गणराज्य इस काल में हरियाणा में ही नहीं बल्कि भारत के विभिन्न हिस्सों में थे। इस काल की शासन व्यवस्था को किसी व्यक्ति का नाम उभर कर सामने नहीं आता बल्कि उन्हें कबीलाई आधार पर पहचाना जाता है। महाजनपद कल से लेकर मौर्य साम्राज्य की स्थापना के दौरान कई गणराज्य थे जिन्हें राजतंत्र व पश्चिमोत्तर भारत में सिकंदर ने इनका अंत कर दिया। मगध साम्राज्य के काल में ही सिकंदर का आक्रमण हुआ तथा इसी साम्राज्य के अवशेषों पर मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुई। हरियाणा का क्षेत्र इसी साम्राज्य का हिस्सा बना रहा। इसके बाद जिन केंद्रीय सत्ता काबिज हुई, मौर्य साम्राज्य का पतन हुआ तथा क्षेत्रीय सत्ता उभर कर आई। हरियाणा क्षेत्र में कई गणराज्य उभरकर आए लेकिन अग्रोहा क्षेत्र से जुड़े वे गणराज्य यौधेय एवं अग्र महत्वपूर्ण थे। हरियाणा की स्थानीय गणतन्त्रीय व्यवस्था में अटूट विश्वास रखने वाली जनता ने यहां गणतन्त्रीय व्यवस्था फिर लागू कर दी।

3.1.1 यौधेय गणराज्य :–

यौधेय अग्रोहा क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण कबीला था। लगभग पांचवीं शताब्दी ई. पू. के बाद इन्होंने इतिहास में प्रवेश कर दिया था। इस पर काफी विद्वान सहमत थे। इस प्रकार मौर्यों से पहले व गुप्त वंश की स्थापना तक की स्थितियों ने यौधेय गणराज्य को उभरने का समुचित अवसर दिया। इस वंश की जानकारी के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत खुदाई से प्राप्त चीजें, सिक्के व टकसाल है। शकों तथा कुषाणों के आगमन से योधेयों की सत्ता को धक्का लगा। शकों से तो उन्होंने बचाव कर लिया और स्वयं को शक्तिशाली भी बनाया परंतु कुषाणों से युद्ध में पराजित हुए। इसीलिए शुरू समय के लिए कुषाणों के सिक्के भी यौधेय राज्य में मिलते हैं। यह काम कुषाण वंश के शासक ने किया। उसका यहां पूरा नियंत्रण हो गया। वासुदेव कुषाण के समय ने यौधेयों ने ना केवल अपने आप को ही स्वतंत्र कराया, बल्कि भारत भर को कुषाणों के चंगुल से मुक्त करा दिया। डॉक्टर अभय सदाशिव अल्लेकर का विचार है कि यौधेयों ने यह काम अर्जुनायण आदि अनेक अपने पड़ोसी गाण राज्यों को शक्तिशाली संघ बनाकर किया। इसका एक महत्वपूर्ण घटना को चिरस्थाई बने होने यौधेयों ने इस समय पहला प्रकार के सिक्के चलाए थे। जिस पर लिखा था– यौधेय गणराज्य जय– अर्थात यौधेयों ने शत्रु पर विजय प्राप्त की। यौधेय का राज्य, एक गणतंत्रीय शासन प्रणाली पर आधारित था। यौधेयों के सिक्कों पर 'गया' शब्द की विद्यमानता से इस विषय में कोई शक नहीं रह जाता है। अग्रोहा से मिले एक प्राप्त गुडांक लेख से यह दिलचस्प

बात स्पष्ट हुई है कि महाराजा ही महाराजा होता था। इसका इसका अर्थ यह हुआ कि यह महाराजा अत्यधिक शक्तिशाली पदाधिकारी होता था। प्रजातंत्रात्मक नगर (औरंगाबाद) यौधेयों की राजधानी थी। यहां से समस्त जनपद को प्रशासित किया जाता था। यौधेय गणराज्य की सैनिक प्रजा भी उच्च कोटि की थी। राजा ही सब ने बड़ा सेनापति होता था। गुप्तकाल तक यौधेयों का शासन यथास्थिति में था। कार्तिकेय इनका महत्वपूर्ण शासक था। परंतु गुप्त काल के सुप्रसिद्ध शासक समुद्रगुप्त (333–75)के हाथों यौधेय पराजित हुये तथा उनके राज्य का विलय गुप्त साम्राज्य में हो गया।

3.1.2 अग्र गणराज्य :–

प्राचीनकाल में यौधेयों की तरह ही यहां एक अन्य प्रचलित गणराज्य था। अग्रो का। जिनकी राजधानी अग्रोहा थी। वितानोवा का ध्यान इस गणराज्य की ओर गजेंद्रियों बरवाला (हिसार) से प्राप्त सिक्कों से हुई। सन 1938–1939 में एच.एल. श्रीवास्तव को ऐसे ही 51 सिक्के अग्रोहा से प्राप्त हुये। यह सिक्के सोने व तांबे की धातु से बने हैं। अग्रोहा से एक टकसाल भी प्राप्त हुई है। पुरातत्व वैज्ञानिक अग्रोहा में खुदाई के आधार पर इसे एक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण नगर मानते हैं। 141 एकड़ में फैले इस नगर में विस्तृत बड़े–बड़े महल तथा 'अग्र' शब्द अंकित सिक्के प्रचुर मात्रा में पाए गए हैं। पाणिजी की अष्टाध्यायी में भी अग्रोहा का उल्लेख है। इस नगर की प्रमुखता की वजह से इसे अग्र गणराज्य की राजधानी माना जाता है। अग्रोहा काफी महत्वपूर्ण केंद्र था तथा राजनीतिक गतिविधियों का संचालन भी यहां से होता था। स्वामी ओगानंद (गुरुकुल झज्जर) को भी यहां से बहुत सारे सिक्के मिले। इसके बाद अन्य पुरातत्ववेताओं को भी अग्रों के बहुत सारे सिक्के यहां से प्राप्त हुए हैं। इससे यह साफ जाहिर होता है कि अग्र नामक जन हिसार क्षेत्र में रह रहा था और अग्रोहा इसका मुख्य केंद्र था। 'मायुवटी' नामक बौद्धग्रंथ में अग्रोहा का प्राकृतिक राज्य 'असिद्धक' मिलता है। बौद्धायान के श्रौतस्तूप और पंतजलि के महाभाष्य में भी इसकी चर्चा हुई है। महाराज भी इससे प्रभावित थ। सिकंदर के आक्रमण के समय यह गण पूरी शक्ति के साथ विद्यमान था। सिकंदर के इतिहासकार इसे ''अगलरसोई'' कहते हैं। सिकंदर ने इस गण से युद्ध किया था। अग्रों की सेना में 40000 पैदल और 3000 घुड़सवार थे। वे सिकंदर की सेना से वीरतापूर्वक लड़े थे। सिक्कों पर अग्रों के लिए अगाज नाम लिखा है। कई जगह अग्रतय शब्द भी इसके लिए प्रयुक्त हुआ है, जिनो अर्थ है अग्र प्रदेश के रहने वाले।

अग्रोहा में उत्खनन भी हो चुका है, जिससे काफी मूल्यवान सामग्री मिली है। इस सामग्री के आधार पर पुरातत्वविद इसके बसने की विधि चौथी शती ईसवी पूर्व के आसपास रखते हैं। 12वीं शती तक यह अपनी विभिन्न संस्कृतियों के प्रताप से अग्रसर रही, पर इसके बाद नहीं। अग्रोहक अथवा अग्रोहा इन गण की राजधानी थी। यह अति विशाल नगर था। संभवतः शती ईसवी पूर्व के आसपास यह गण अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने में सफल हो गया था। सिकंदर के आक्रमण के बाद अग्र मौर्य राज्य के अधीन हो गये। मौर्य राज्य के पतन के बाद फिर स्वतंत्रता का दौर शुरू हुआ और वह स्वतंत्र हो गये। परंतु शकों व कुषाणों के आक्रमणों के कारण स्थिति पुनः खराब हो गई तथा कुषाण इस क्षेत्र में स्थापित हो गये। यशवत वासुदेव कुषाण के समयगण जनों के साथ अग्रों ने भी यौधेयों से मिलकर कुषाणों को वहां से खदेड़ा था। इसके बाद अग्रों का विलय यौधेयों में हो गया लगता है। इसके बाद इनके बारे में हम कुछ भी नहीं सुनते हैं और आगे चलकर यौधेय गणराज्य का पतन समुद्रगुप्त के राज्य विस्तार के चलते हो जाता है। इस तरह पुरातात्विक व साहित्यिक स्रोतों से इस बात की पुष्टि हो जाती है कि अग्र गणराज्य लगभग 5वीं शताब्दी से ईसवी पूर्व से दो शताब्दी ई. तक अमरोहा क्षेत्र में स्थापित रहा। उसके बाद यौधेयों की एक प्रशासनिक इकाई व राजधानी रहा। चौथी शताब्दी से लेकर बरहवीं शताब्दी तक अग्रोहा नगर का महत्व कब हुआ लेकिन यह क्षेत्र आबाद रहता है। राजपूत शासको की गतिविधियों का भी लम्बे समय तक यह केंद्र रहा। राजपूतों में गुर्जर प्रतिहारों के इस क्षेत्र में शासन करने तथा इस नगर के विकास में योगदान के प्रमाण मिलते हैं। सबसे ऊपरी परत जो मिली है उसमें राजपूतों के शासन को इंगित करने वाले कई साक्ष्य प्राप्त हुए हैं। हालांकि 10वीं शताब्दी को नगर में स्थापित भवन तथा दैनिक वस्तुएं जो प्राप्त हुई है वो सामान्य जन–जीवन को दर्शाता है।

3.2 आर्थिक इतिहास –

यौधेय व अग्र गणराज्य आर्थिक दृष्टि से काफी संपन्न लोग थे उनसे संबंधित विभिन्न स्थानों की खुदाई इन की व्यावसायिक कृषि व पशुपालन की जानकारी मिलती है। आर्थिक पक्ष में उद्योग की दृष्टि से उनकी स्थिति काफी अच्छी थी। यहां कई उद्योग–धंधे स्थापित थे। लेन–देन मुद्रा से होता था। इस क्षेत्र में राजधानी होने के कारण टकसाल थी जहां सिक्कों का निर्माण होता था। बीरबल साहनी नामक एक पुरातत्वविद् ने उनके बारे में अपनी पुस्तक ''द टेक्निक ऑफ कॉइन इन असिएंट इंडिया'' में लिखा है कि सारे विश्व में जो अब तक टकसालों में मुद्राओं को बनाने की सामग्री मिली है उनमें अग्रोहा से प्राप्त सामग्री सर्वोत्तम मूल्यावान व महत्वपूर्ण है। वे इनके सिक्कों तथा टकसाल को उन्नत विज्ञान व तकनीक की देन बताते हैं। अग्र जनपद के बहुत सारे सिक्के अगोहा बरवाला और नौरंगाबाद से प्राप्त हुये हैं। अग्रोहा तक्षशिला व मथुरा मार्ग के बीच में पड़ता था जिससे यह व्यापारिक गतिविधियों का केंद्र रहा होगा। व्यापारियों के लिए घोड़ा आवागमन में प्रयोग होता था और वे इस क्षेत्र में होने वाली अंजना घास का प्रयोग घोड़ों के लिए करते थे।

3.3 धार्मिक जीवनः–

पुरातात्विक सामग्री के साथ–साथ दिव्या वादान जातक कथाओं व महामंजरी में भी विभिन्न प्रसंगों में जो वर्णन आता हैं जो इस क्षेत्र के राजनैतिक आर्थिक महत्व के साथ–साथ धार्मिक महत्व को बताता हैं। धार्मिक दृष्टि से अग्रोहा समन्वय का केंद्र रहा है। वैदिक सभ्यता क दूसरे चरण मे उतर वैदिक सभ्यता के बाद वेदोतर काल आया। इस काल में यहां विभिन्न तरह की राजनैतिक सामाजिक व सांस्कतिक गतिविधियां चल रही थी। इसके बाद छठी शताब्दी ई. पू. में भारत के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न 62 समाज के धर्म सुधारकों की गतिविधियां देखने को मिलती हैं। जिनमें बौद्ध जैन व चार्वाक की गतिविधियां अधिक चर्चा में आती हैं। इस कड़ी में अग्रोहा क्षेत्र में बौद्ध धर्म की गतिविधियां स्पष्ट होती हैं। अग्रोहा के टीले की तीसरी परत में मुख्य रूप से जो सामग्री मिली हैं वह इस संदर्भ में काफी कुछ कहती हैं। जितनी विकसित व व्यापक बौद्ध मठ की सरंचना यहां मिलती है तो एक अच्छी विकसित बौद्ध परम्परा का यह एक ग्वाह रहा है। इसके साथ जैन सम्प्रदाय की जानकारी देने वाले भी यहां तथ्य मिलते हैं। धार्मिक जीवन के बारे में अधिक जानकारी कालिदास की रचना 'कुमारसम्भव' में दी गई हैं। कालिदास की रचना में स्कन्द–कार्तिकेय संवाद में विशेष रूप से लिखता है कि ये लोग बहुत शक्तिशाली हैं तथा क्षात्र धर्म में विश्वास करते हैं इनके धर्म को गुप्तों ने ग्रहण किया। इनको सम्मान देते हुए गुप्त शासक कुमारगुप्त ने कार्तिकेय के मंदिर का निर्माण भी करवाया। यौधेयों के सिक्कों तथा मूर्तियों में कार्तिकेय को मयूर पर बैठा दिखाया गया हैं। हालांकि विभिन्न स्थानों के खनन में इस कालखंड के कोई विशेष मंदिर या मूर्ति के प्रमाण नहीं मिले लेकिन युद्ध लड़ते यौद्धाओं के चित्र सिक्कों पर जरूर उभर कर आते हैं। सनातन परम्परा से जुड़े हुए मंदिरों के अवशेष पहली परत से खण्डहर अवस्था में प्राप्त हुए हैं। अग्रोहा में एक स्थान पर राख मे मानव की अस्थियों का मिलना इस बात का प्रमाण है कि शवों का अंतिम संस्कार दहन के रूप में होता था। आज अग्रोहा जो एक धार्मिक पर्यटन के रूप में विकसित है यहां धार्मिक पर्यटन प्राचीन काल से ही रहा है जो एक अच्छा ज्ञान सम व समन्वय का आधार रहा हैं तथा एक समन्यवादी संस्कति धार्मिक दष्टि से विकसित थी।

सांस्कृतिक जीवनः–

सांस्कृतिक जीवन से अभिप्राय है अग्रोहा के प्राचीन कला व स्थापत्य कला नगर व भवन का स्वरूप क्या था। अग्रोहा से जो तीन परतें जो तीन काल खंड को अभिव्यक्त करते हैं। इनमें सबसे पहली परत में सामान्य किले व अन्य कई कलात्मक तथा दैनिक जीवन में उपयुक्त होने वाली वस्तऐं खुदाई में मिली हैं जो लगभग 1000 ई. की हैं। कुषाण काल की अवधि से प्राप्त ''टैबलैट'' संगीत के इतिहास में विशेष स्थान रखती है। इस पर नी धा पा मा गा रे सा आदि ब्राह्मी लिपि में अंकित हैं। यह संगीत के इतिहास से संबंधित सबसे पुरानी पुरातात्विक सामग्री हैं। दूसरी परत से मूर्तियां, अलग–अलग प्रकार के बर्तन, आभूषण, ताम्बे की तलवार, बच्चों को खिलौने, चूड़ियां मिलती हैं। अग्रोहा से जो सिक्के मिलते हैं अग्र जनपद के वे कलात्मक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण हैं।

दूसरी परत से नगर–नियोजन व भवन विन्यास के जो प्रमाण मिलते हैं वे दर्शाते हैं कि नगर–नियोजन की उत्कृष्ट स्थापत्य कला विकसित थी। नालियों की समुचित व्यवस्था निकासी के लिए दिखलाई पड़ती है। क्योंकि अग्रोहा एक व्यापारिक नगर व आर्थिक दृष्टि से ही संपन्न नहीं था बल्कि एक राजधानी क्षेत्र था। इसीलिए प्राचीन काल में इसका नगर बहुत विकसित अवस्था में था। विकसित सभ्यता के लोग यहां रहते थे। तीसरी परत में हमें जिस तरह का बौद्ध मठ व स्तूप मिला है जो ईंटों से निर्मित है। इसकी संरचना बहुत बिरली है तथा बेहतरीन है तथा देश में मिले प्राचीन काल के उच्चकोटि के स्तूपों की श्रेणी में रख सकते हैं। इसमें सबसे महत्वपूर्ण यहां बौद्ध स्तूप हैं जिसे खण्डहरों के रूप में देखा जा सकता हैं। इसके केन्द्र में मुख्य स्तूप हैं तथा इसके चारों ओर छोटे स्तूप है। इन सभी के चारों ओर बौद्ध भिक्षुओं के रहने के मठ हैं जिनका आकार काफी छोटा हैं जो प्रत्येक भिक्षु के लिए अलग–अलग भी स्वीकार किये जा सकते हैं। आकार–प्रकार व बसावट में यह स्तूप क्षेत्र सांची के स्तूप से तो काफी छोटा है परन्तु जगाधारी के पास सुध सनेत व कुरूक्षेत्र स्थित चैत्य से कुछ बड़ा हैं। मध्य क्षेत्र के स्तूप को जिस तरह अन्य क्षेत्र के स्तूप सुरक्षित करते है तथा इसके चारों ओर जो परिक्रमा करने की जगह बनी हैं वह सामान्य रूप से उन स्थलों पर होती हैं जिन्हें अधिक महत्व का स्वीकार किया जाता हैं। इस स्तूप से थोड़ी दूर सामान्य बस्ती के प्रमाण मिलते है जो भले ही पक्की इंटों की बनी हैं लेकिन इनकी निर्माण शैली बेहद सामान्य है।

4. मध्यकालीन व ब्रिटिश काल अग्रोहाः

प्राचीन कालीन अग्रोहा में जिस तरह से गणराज्य समाप्त हुये, उसके बाद यह कभी भी पुनः उसे स्थिति तक नहीं आ सका। इस काल के बारे में अधिकतर जानकारी साहित्यिक स्रोतों व विदेशी यात्रियों के वृतांत में है। इनके इस स्थान का सामान्य रूप में वर्णन मिलता है या फिर इसे वे चिराग दर्शाया गया है। समय के साथ–साथ इसका महत्व गौण होता गया तथा यह सिकुड़ता हुआ एक गांव के रूप में स्थापित हो गया। 1194 में अग्रोहा पर मोहम्मद गौरी ने कब्जा कर लिया और अग्रोहा में धीरे–धीरे बसावट कम हो गई और लोग पास के हांसी, हिसार, दिल्ली और दूर के स्थान में बस गये।

मिंदाल–उल–सिराज, तबकात–ए–नासिरी में इस हांसी के समीप इक्ता के रूप में लिखा है, उसके अनुसार यह लगभग बेचिराग था, परंतु आसपास के लोग इसे इस नाम से जानते थे। इलुतमिश ने इसे इक्ता बनाया तो बलबन व अलाउद्दीन खिलजी तक जारी रहा। इसी तरह से मोहम्मद अजीक अपनी रचना तारीख–ए– फिरोजशाही में इसे बेचिराग लिखता है परंतु यहां स्थित भवनों के खंडहरों को सुल्तान फिरोजशाह द्वारा हिसार के किले में प्रयोग में लाया गया। हिसार के किले के वास्तुकार मलिक हनीयाल बगोटी का यहां कई बार आगमन हुआ। उसने यहां पर काम करने वाले लोगों को यही बसने के लिए प्रोत्साहित भी किया जिसका लाभ भी हुआ तथा कुछ परिवार रहने लगे। इसके बाद में अबुल–फजल द्वारा आईन–ए–अकबरी में हिसार के बारे में जानकारी देने देते हुए इसे राजस्व की दृष्टि से काफी उपजाऊ क्षेत्र बताया है। मुस्लिम अरबी यात्रियों में अलबरूनी ने अपनी रचना तहकीकात–ए–हिंद में इस क्षेत्र को जंगलों से भरपूर बताया है। मोहम्मदबिन तुगलक के काल में आगा वाला अफ्रीकी यात्री इक्बतुता यहां से गुजरा तथा अपनी पुस्तक रेहला(सफरनामा)में इसकी दूरी दिल्ली से 10 दिन दूर बताई है। वह इस क्षेत्र को शिकार के लिए उपयुक्त बताता है तथा पानी की कमी का वर्णन करता है। मुगल काल के यूरोपीय यात्रियों में टेरी, राल्फस्मिथ, डीलायर बर्नियर के वृत्तांत में यह विस्तार के साथ जुड़ा हुआ बताया है। ये इस क्षेत्र की वनस्पति, जंगल व शिकारगाह का वर्णन करते हैं। टेरी ने यहाँ की भैंस के दूध को काफी स्वादिष्ट बताया है।

1765–81 के दौरान पटियाला राजा के दीवान नन्नुमल अग्रवाल द्वारा अग्रोहा का पुनः बसाने हेतु कार्यवाही की गई, यहाँ पर एक किले का निर्माण करवाया तथा आबाद क्षेत्र को सुरक्षा प्रदान करवाई।

ऐनल के द्वारा 1783–89 में इस क्षेत्र में काल का वर्णन करते हुए अग्रोहा का वर्णन भी किया है तथा चित्र भी दर्शाया है। इस काल के कुछ विदेशी यात्रियों के वृतांत में भी अग्रोहा का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वर्णन आया है। अंग्रेज यात्रियों में कर्णड टाडकनिंघम व लुइसडम के द्वारा दिए गए वृत्तांत में अग्रोहा उभर कर आया है। जो

इस क्षेत्र के टीले कृषि व घोड़ों के लिए अनुरूप अन्जरा द्वारा का वर्णन करते हैं। इस काल में हिसार काफी विकसित हो गया था तो समीपवर्ती क्षेत्र के बजाय इसकी पहचान अच्छी बन गई थी। 1832 ईस्वी में हिसार के जिला बनने के बाद अग्रोहा एक गांव के रूप में ही रह गया।

5. लोकधारा में अग्रोहा:

किसी भी क्षेत्र की परम्परा रीति–रिवाज, लोक कथाएं, कहानियाँ, किस्से, कहावतें, मुहावरे, लोकोक्तियां, लोकगीत व जन–श्रुति में उसे क्षेत्र के मूल संस्कृति व समृद्धि छिपी होती है। जब इस समझ को विभिन्न पक्षों की जानकारी के लिए प्रयोग में लाया जाता है तो यह लोकधारा या लोक चेतना कहलाती है। यह उन क्षेत्रों के लिए बहुत उपयोगी मानी जाती है जहां अन्य तरह के तथ्यों का अभाव हो। दूसरी ओर यह भी सत्य है कि इसका प्रयोग जोखिम भरा व चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि इसमें कपोल कल्पना, स्वयं प्रशंसा व क्षेत्र विशेष के प्रति पूर्वाग्रह बहुत अधिक होता है, जिससे सच्चाई अर्थात वस्तुनिष्ठतापूर्ण लेखन की गुंजाइश पर हमेशा प्रश्न चिन्ह उठाते हैं, जिनको अन्य तथ्यों के साथ तुलनात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। उक्त बातें अग्रोहा के सन्दर्भ में भी लागू होती हैं, क्योंकि इसकी जानकारी का यह बहुत बड़ा स्रोत है। विशेषकर अग्रोहा की विरासत व महाराजा अग्रसेन से इसका सम्बन्ध इस तरह के स्रोतों में अधिक मिलता है। जिन लोगों ने इस बारे में शोध किया है या रचनाएं दी हैं। उन्होंने इन स्रोतों को साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया है। इन लेखकों के वासुदेव शरण अग्रवाल, परमेश्वरी लाल गुप्त, राधा कमल मुखर्जी, स्वराजमणि अग्रवाल, चम्पालाल गुप्ता, ओगानन्द सरस्वती, देवकीनन्दन गुप्त तथा भारतेंदू हरिश्चन्द्र शामिल हैं। इस सन्दर्भ में स्पष्ट है कि इस तरह की रचनाओं में महिमा मंडल को समझते हुए तथ्यों का विश्लेषण करने का कार्य किया जा सकता है, तथा विभिन्न सन्दर्भ में दी गई जानकारी मूल्यांकन कर निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

इन विभिन्न पक्षों का ध्यान रखते हुए अग्रोहा के सन्दर्भ में भी लोकधारा का प्रयोग काफी महत्व रखता है तथा जानकारी को व्यावहारिक व वैज्ञानिक रखने में सहायक हो सकता है। इस पक्ष का भी संक्षेप वर्णन इस प्रकार है :– पौराणिक साहित्य में भविष्य पुराण में सर्वप्रथम महाराजा 'अग्र' का वर्णन मिलता है। जो स्वयं को अग्र कबीले का स्वीकारते थे तथा स्वयं के लिए अग्र शब्द का प्रयोग करते थे, उनकी राज आज्ञाएं भी इसी नाम से जारी होती थी। इस मूल नाम का ही विस्तार 'अग्रसेन' के नाम से स्थापित हुआ। इसी तरह पौराणिक साहित्य में ही महालक्ष्मी व्रत कथा का वर्णन आता है जिसमें राजा दिवाकर व अग्रोक शब्दों का प्रयोग किया गया है, वर्तमान में अग्रसेन के वंशज इस कथा में दिए गए वर्णन को प्रसांगिक मानते हैं तथा उसमें आस्था भी रखते हैं। महा लक्ष्मी की इस व्रत कथा में नायक के लिए अग्र शब्द का प्रयोग हुआ है तथा कबीले के लिए अग्रसैनिक शब्द प्रचलित में आया है। इन दोनों शब्दों की व्याख्या ऐतिहासिक सन्दर्भ में वर्णित अग्र–गण के रूप में की गई है जिसका ऐतिहासिक साक्ष में ही नहीं बल्कि, पुरातात्विक साक्ष्यों विशेषकर सिक्कों पर नाम है। अधिकतर सिक्कों पर यह शब्द ब्राह्मीलिपि में है तथा बीच–बीच में ऐसे सिक्के भी मिले हैं जहां यह संस्कृत में भी लिखा मिलता है। पाश्रवनाथ की 'परम्परा पःावली' में दिवाकर पुत्र श्रीनाम का वर्णन मिलता है। जिसमें श्रीराम के वंशजों में प्रतापी शासक महाराजा अग्रसेन का नाम आता है। जिसमें अग्रसेन के चिंतन व शासन प्रणाली के बारे में भी बताया गया है कि उन्होंने किस तरह से प्रजा के साथ जुड़कर शासन किया तथा अपने साम्राज्य में सुख व शांति दी। भारतेंदु हरिश्चंद्र की रचना 'अग्रचरित तन्त्र' में ये अग्रवालों की उत्पत्ति के बारे में बताते हुए, स्पष्ट किया गया है कि महाराजा अग्रसेन, अग्रवाल समाज के प्रणेता थे तथा इस समाज के विभिन्न गोत्रों की उत्पत्ति भी उन्हीं से जुड़ी हुई है। वे महाराज अग्रसेन की सत्ता का केन्द्र राजधानी अग्रोहा को लिखते हैं। उन्होंने इस रचना में अग्रवालों व महाराजा अग्रसेन की वंशावली का वर्णन भी किया है। गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के पूर्व कुलपति श्री गंगाराम गर्ग का मानना है कि महाराजा अग्रसेन प्रारंभिक प्रतापी पुरुष थे तथा उनकी 11वीं पीढ़ी में अग्र नाम के व्यक्ति हुए जिन्होंने अग्रोहा को राजधानी बनाया तथा व्यवस्था को संचालित किया। भारतीय संस्कृति में इतिहास लेखन परम्परा नहीं थी बल्कि एक समुदाय जिन्हें 'भाट' कहा जाता था, यह उनका काम था कि समाज के विभिन्न कुलों, परिवारों के बारे में सूचनाओं एकत्रित करें तथा

उन्हें संकलित कर कथाओं व गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करें। ऐसे में महाराजा अग्रसेन के बारे में भी भाटों द्वारा गीत लिखे गए, जिनमें उनके पूर्वजों का वर्णन है तथा उनकी उस यश गाथा का वर्णन है जिसके तहत उन्होंने अपना राज्य स्थापित किया। उन्होंने समाज के लोगों में बसने व व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिए कैसी सहयोग की नीति अपनाई? इसका भी वर्णन है। अग्रोहा के ऐतिहासिक महत्व पर भाटों द्वारा गीत रचे गए। दूसरी ओर कुछ भाटों के गीत ऐसे भी हैं जो इस वंश के लिए या अग्रोहा के लिए नहीं गए गए, बल्कि किसी अन्य का वर्णन करते हुए इनका वर्णन आ गया। इनमें समरजीत नामक राजपूत का वर्णन आता है जो तोमर चौहान राजपूत परम्परा से था तथा उसने अग्रोहा को आक्रमणकारियों से बचाने के लिए संघर्ष किया था।

इस तरह से विभिन्न तरह के गीत दन्त कथाएं व कहानियाँ हैं जिनमें अग्रोहा के तालाब, सती की कहानी, हरभाग शाह की कथा, अग्रवालों के संस्कार, प्रथाएं व रीति रिवाज तथा इस वंश की उत्पत्ति को अपने–अपने ढंग से अभिव्यक्त करती है। इन सभी के सन्दर्भ में तथ्यात्मक व ऐतिहासिक पक्ष की जानकारी नहीं के बराबर है। परन्तु जिन लोगों का इसमें विश्वास है तथा स्वयं को उनके साथ जोड़ते हैं, वे किसी न किसी मत को अभिव्यक्त करते हैं तथा सहमति देते हैं। इसी तरह जैन धर्म के सन्दर्भ में भी विभिन्न तरह की कथाएं मिलती हैं जिनमें श्वेताम्बर व दिगम्बर दोनों मतों के अनुयायी प्रस्तुत करते हैं इसमें यह भी है कि जैन धर्म में विश्वास करने वाले लोग अग्रवाल समाज से कैसे जुड़े या फिर अग्रवाल समाज द्वारा जैन धर्म को कैसे स्वीकार किया गया। जिनमें विभिन्न तरह के चमत्कार भी जोड़े जाते हैं। ये सभी पक्ष इस तरह के हैं जो किसी भी अन्य मत में विश्वास करने वालों के होते हैं तथा अपने मत या दर्शन को प्राचीन से प्राचीन प्रमाणित करने का प्रयास किया जाता है। इसी तरह के मत मौखिक पक्ष से निकल कर लिखित रूप में भी आ जाते हैं या फिर मीडिया पर किसी न किसी रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। परंतु इससे उनकी ऐतिहासिकता प्रमाणित नहीं हो पाती। यही कारण है कि अन्य स्रोतों से तुलना करने पर लोकधारा अपना यह वह विश्वासनीय पहलू नहीं बन पायी। हाँ, वर्तमान में जिस तरह से विश्व की अध्ययन की शैली बढ़ रही है तथा समाज विज्ञान के विषयों की प्रकृति में बदलाव आ रहा है त्यों–त्यों इसको जाँचने, परखने की शैली में भी बदलाव आ रहा है तथा वे बहुत से नए पहलू या प्रसंग भी उभर कर आ रहे हैं जिन्हें पहले या परम्परागत शोध में उपयुक्त जगह नहीं मिली।

6. समकालीन इतिहास व अग्रोहा का पुनर्निर्माणः

6.1 अग्रवाल समुदाय– इतिहासकारों का मत है कि भारत की अनेक जातियों का उद्भव प्राचीन गणराज्य के जनपदों से हुआ। इसी के अनुरूप माना जाता है कि अग्रवाल जाति का उद्भव अग्रोहा नामक जनपद से हुआ और यहीं से अग्रवाल भारत के विभिन्न भागों में फैले। अग्रवाल समुदाय के लोग अपनी उत्पति अग्रसेन से मानते हैं। अग्रवाल शब्द की उत्पति के बारे में भिन्न–भिन्न इतिहासकारों में भिन्न–भिन्न मत हैं। अग्रोहा के निवासी होने के कारण और बाद में अलग–अलग स्थानों पर सदा आगे रहने वाली जाति के लोग अग्रवाल कहलाए। जिसका अर्थ होता है सदैव आगे रहने वाले।

अग्रवाल समुदाय जाति वैश्य नहीं हैं। यह अपने गुण कर्म के कारण वैश्य कहलाते हैं। प्रारम्भिक काल में अग्रवालों की मुख्य आजीविका कवि, पशुपालन और व्यापार होता था। परन्तु कालांतर में वाणिल्य की तरफ ज्यादा झुकाव होने के कारण इस समुदाय का मुख्य व्यवसाय व्यापार हो गया। आज भी कुछ अग्रवाल खेतीहर हैं। अग्रवाल समाज केवल अग्रवाल शब्द के उपनाम को ही नहीं सम्बोधित किये जाते हैं, इसके अलावा भी इसके कई अन्य उपनामों से जाने जाते हैं जैसे –

बनिया– जो सभी कार्यों को बनाने की क्षमता रखता हो, जो सब का बन सकता है और सबको अपना बना सकता हो।

वणिक– वाणिज्य व्यापार करने के कारण।

सेठ – समाज में श्रेष्ठ आचरण के कारण।

महाजन– जनों में विशिष्ठ, महान स्थान रखने वाला।

वैश्य – प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश के कारण, गतिशील होने के कारण।
गुप्त/गुप्ता–व्यापारिक गूढ़ता को बनाये रखने के कारण।
शाह – बड़ा–महान–साहूकार

अग्रवाल जाति के लोग धर्मपरायण, शाकाहारी और अपने ईस्ट देव भगवान में इनका अटूट विश्वास होता है। पूजा–पाठ इनके दैनिक जीवन का अंग हैं। देवी महालक्ष्मी के उपासक और दान व कर्तव्य के परायण होते हैं। कर्म में इनका विश्वास होता है। अग्रवालों में उन्नत संतति हो इस सिद्धांत को ध्यान में रखकर आदिकाल से ही सह–गौत्रीय विवाह निषेध है। अग्रवालों के 18 गोत्र निम्न हैं–

उपरोक्त के अलावा अग्रवाल अपने नाम के साथ अपने परिवार के उपनामों का भी प्रयोग करते हैं जैसे– जालाज, सिंघानिया, सुटिका, बजाज, खेतान आदि। अग्रवाल समाज के प्रत्येक सदस्य में महाराजा अग्रसेन का समाजवाद रग–रग में प्रवाहित हो रहा है।

6.2 समकालीन इतिहास

20वीं शदी में अग्रोहा को फिर से जीवंत करने के प्रयास अग्रवाल समुदाय के द्वारा शुरू हुए। 1907 में एक तपस्वी ब्रह्मानंद ब्रह्मचारी अग्रोहा पहुंचे उन्होंने अग्रवाल समुदाय के प्रतिनिधियों को प्रेरित करके 1908 में अग्रवाल दरबार महाराजा अग्रसेन ज्योतिरथ यात्रा ने 14 अप्रैल 1975 को अग्रोहा से शुरू होकर पूरे देश का भ्रमण किया है। 4 अप्रैल 1976 को अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन ने अपने प्रथम सम्मेलन नई दिल्ली में यह प्रस्ताव पारित किया कि अग्रोहा का पुनर्निर्माण किया जाये, उसी के अन्तर्गत 9 मई 1976 को अग्रोहा विकास ट्रस्ट का गठन किया गया और 21 सितंबर 1976 को अग्रोहा निर्माण शिलान्यास समारोह का आयोजन किया गया। इसका पूरा श्री रामेश्वर दास गुप्ता, धर्म भवन, साउथ एक्सटेंशन, नई दिल्ली को जाता है जिन्होंने ढाई करोड़ अग्रवालों को एक सूत्र में बांधने, एक मंच पर एकत्रित करने व एक झंडे के नीचे इकट्ठा कर खड़ा करने का कार्य किया। जिसके कारण एक लंबे समय से एक खेड़े (थेह) के रूप में दबा अग्रोहा पुकार–पुकार कर आर्तनाद कर रहा था, ''मेरे वंशजो! तुमने देश के निर्माण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है तुम्हें लक्ष्मी जी का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है, स्थान–स्थान पर धर्मशालाए, शिक्षा संस्थान, चिकित्सालयों की स्थापना की, अतः मेरा भी पुनरुत्थान और पुनः निर्माण करो''। वह सपना आज सरकार हो रहा है। अग्रोहा को अग्रवाल समाज के पांचवें धाम के रूप में विकसित करने का पिछले 40 वर्षों से लगातार कार्य चल रहा है, काफी कुछ कार्य हुआ है और हो रहा है। जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे प्रस्तुत हैः–

6.3 वास्तुकला आकर्षण के केन्द्र

अग्रोहा धाम 1976–1984 के बीच निर्मित 67 एकड़ के विशाल परिसर में फैला है। मुख्य आकर्षण त्रिकूट मंदिर है जिसके तीन विशाल शिखर हैं। मंदिर के शीर्ष पर घोड़ों पर सवार सूर्य की एक विशाल मूर्ति आपका स्वागत करती है। यह सूर्यवंश की वंशावली को दर्शाती है।

1. महाराजा अग्रसेन प्राचीन मंदिरः– वर्तमान परिसर से आगे महाराजा अग्रसेन जी का प्राचीन मंदिर 1939 में सेठ जगजीवन दास बाजेरिया द्वारा बनवाया गया था। बाद में मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया।

2. प्राचीन गौशालाः– 1915 में सेठ भोलाराम डालमिया तथा लाला सांवरमल के प्रयत्नों से गौशाला की स्थापना की गई। गौशाला का आधुनिक साज सज्जा से युक्त नया भवन दर्शनीय है।

3. कुलदेवी महालक्ष्मी मंदिरः– इस मंदिर में कमलासन पर स्थित चतुर्भुजी माँ महालक्ष्मी की प्रतिमा बड़ी चित्र चित्रार्कषक है। मंदिर का भव्य 180 फीट ऊंचा गुंबद हो 28 अक्टूबर 1985 शरद पूर्णिमा के दिन मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा सिद्ध पीठ के रूप में हुई।

4. शक्ति सरोवर के पास प्राकृतिक केंद्र स्थित है जहां योग के माध्यम से उपचार किया जाता है। परिसर के पास नौकायण स्थल के पास एक मनोरंजन पार्क बनाया गया है।
मंदिर पहुंचने का समय–मंदिर में आरती का समय सुबह 5.00 बजे शुरू होता है जो 2 घंटे तक चलता है। आरती के बाद सुबह 7.00 बजे मंदिर परिसर भक्तों के लिए खोल दिया जाता है जो रात 8.00 बजे तक दर्शन कर सकते हैं। मंदिर का आध्यात्मिक वातावरण श्रद्धालुओं के दिल और दिमाग को शांति प्रदान करता है।6.

5. वीणा वादिनी सरस्ती का मंदिर –लक्ष्मी जी के साथ सरस्वती की आराधना अपेक्षित है। बिना विवेक व बुद्धि के लक्ष्मी स्थायी नहीं रहती। महालक्ष्मी मन्दिर के पास वीणावादिनी सरस्ती जी का मन्दिर है। सरस्वती की प्रतिमा दिव्य तेज से युक्त है।

6. शक्ति सरोवर :–300–400 फुट आकार का विशाल शक्ति सरोवर जो निर्मल से भरा रहता है। सरोवर के मध्य भाग में समुद्र–मंथन के दृश्य की झांकी देखने योग्य है। शेषशायी भगवान विष्णु, गजेन्द्र–मोक्ष, गंगा, यमुना एवं

महाराजा अग्रसेन को लक्ष्मी ली का वरदान की सुन्दर झांकियाँ जो मंदिर परिसर के आस–पास लगाई गई हैं। 1988 में निर्मित इस पवित्र सरोवर में भारत की 41 पवित्र नदियों का जल लाकर प्रवाहित किया गया था।

7. हनुमान मंदिर :–हनुमान की 90 फुट ऊंची प्रतिमा सबसे ऊंची प्रतिमा है और देखने में भव्य व आकर्षक है।

8. शीला माता मंदिरः–शीला माता का भव्य मंदिर बनाया गया है। अग्रोहा पधारने वाले तीर्थयात्रियों के दर्शन का विशिष्ट श्रद्धा केन्द्र है। मंदिर में राधा–कृष्ण, सीताराम, अष्टभुजाधारी दुर्गा, शिव, गणेश, पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती, हनुमान जी आदि देवी–देवताओं के भव्य विग्रह बने हैं।

9. महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज, अस्पताल एवं शोध–संस्थानः लगभग 277 एकड़ में फैला एक बेहतरीन संस्थान है। जो हरियाणा सरकार द्वारा 1995 में बनवाया गया।

अग्रोहा धाम परिसरः इसकी वास्तुकला बहुत सुन्दर है। अग्रोहा धाम मुख्य तीन खंडों में विभाजित है। केन्द्रीय खंड हिन्दू देवी महालक्ष्मी को, पश्चिमी खंड देवी सरस्वती को, पूर्वी खंड महाराजा अग्रसेन को समर्पित हैं। परिसर के प्रवेश द्वारा पर गेट दोनों तरफ हाथी की मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं। यह परिसर किसी महल जैसा लगता है। नामक एक समूह का आयोजन किया।

गौशला, एक शिव मंदिर और 18 सती तीर्थ स्थापित किये। कलकत्ता के ताराचन्द घनश्यामदास जैसे मारवाड़ी अग्रवालों ने इस परियोजना का समर्थन किया।

धाम में कई दर्शनीय स्थल हैं, जिनमें मंदिर परिसर में कृष्ण लाल की झांकी, जमीन से 15 फुट नीचे माँ वैष्णों देवी की गुफा, बाबा अमरनाथ गुफा, तिरूपति नाथजी, भैरवनाथ की प्रतिमायें देखने योग्य हैं।

6.4 . त्यौहार व समारोह– हर साल शरद् पूर्णिमा के अवसर पर अग्रोहा धाम में महाकुंभ महोत्सव का आयोजन किया जाता है, जिसमें देशभर से लाखों श्रद्धालु धाम के दर्शन के लिए आते है। इस आयोजन में संस्कृतिक कार्यक्रम, भंडारा, झांकिया, लोक नृत्य और मेले की रौनक देखने को मिलती है। अग्रोहा धाम में सभी त्योहार मनाए जाते हैं। हर साल महाराजा अग्रसेन जयंती भी बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है जो हर साल अश्विनी माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को मनाई जाती है जो नवरात्रि के पहले दिन होती है। मंदिर में आरती का समय सुबह 5 बजे शुरू होता हैं जो दो घंटे तक चलता हैं। आरती के बाद सुबह 7 बजे मंदिर परिसर भक्तों के लिए खोल दिया जाता हैं जो रात आठ बजे तक दर्शन कर सकते हैं। मंदिर का आध्यातिमक वातावरण श्रदालुओं के दिल और दिमाग को शांति प्रदान करता हैं। नई दिल्ली से अग्रोहा धाम रेलवे, द्वारा या निजी वाहन से भी पहुंच सकते हैं। अग्रोहा धाम से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर हिसार रेलवे स्टेशन है। सड़क मार्ग से अग्रोहा धाम का अन्य राज्यों से भी जुड़ाव है। अग्रोहा धाम परिसर में तीर्थ यात्रियों में पर्यटकों के रुकने के लिए भी व्यवस्था है।

7. वर्तमान अवस्थाः–

हरियाणा सरकार द्वारा अग्रोहा धाम को पर्यटक स्थल में के तौर पर विकसित करने का निर्णय लिया गया। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने 15 अक्तूबर 2023 को कहा कि हरियाणा के ऐतिहासिक पुरातात्विक स्थल अग्रोहा धाम में एक प्रतिष्ठित संग्रहालय स्थापित किया जाएगा। इस स्थल के विकास सेवा केवल आस्था का यह केंद्र विश्व में अपनी पहचान बनायेगा बल्कि यह पर्यटन स्थल के रूप में भी प्रसिद्ध होगा। केंद्र सरकार ने राखीगढ़ी मॉडल के अनुसार अग्रोहा पर पुरातात्विक स्थल की खुदाई भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और हरियाणा राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा संयुक्त रूप से की जाएगी। खुदाई करने से पहले जीपीआर सर्वेक्षण कराया जाएगा। इसके बाद ए.एस. आई. और हरियाणा सरकार के बीच संयुक्त समझौता ज्ञापन (एमओयू) होगा। जिस तरह राखीगढ़ी को विरासत के रूप में संरक्षित करने के लिए केंद्र सरकार लगभग 23 करोड रुपए दे रही है, उसी तरह अग्रोहा के लिए धनराशि उपलब्ध कराई जाएगी। इसके अलावा राज्य सरकार भी यहां चल रही खुदाई के दौरान पर्याप्त बजट उपलब्ध कराएगी।

एक मानव कंकाल मिलने से हलचल मच गई है। पुरातत्व विभाग, चंडीगढ़ सर्कल की टीम बीते कई महीनो से इस टीले की परत–दर–परत इतिहास खंगाल रही है और अब इस ऐतिहासिक स्थल से एक के बाद एक सनसनी कैसे खुलासे` सामने आ रहे हैं पुरातत्व विभाग फिलहाल खुदाई कार्य को विस्तरित करने की योजना बना रहा है। कंकाल के परीक्षण के परिणाम मंदिर और स्तूप के विस्तृत नक्शे और नई नई ट्रेंच की खुदाई आने वाले हफ्तों में इस स्थल से जुड़े और भी राज खोल सकती है। एक और जहां विज्ञान इस घटती की भूतकाल की गहराई में उतर रहा है, वहीं इसकी ओर यह खुदाई देश की नई पीढ़ी को उनके इतिहास से जोड़ने का माध्यम बता रही है। अग्रोहा की यह गाथा एक बार फिर साबित करती है कि भारत की मिट्टी के नीचे छिपे हैं वह अनमोल रतन, जिन्हें खोजने की देर है। लंबे समय बाद (44 वर्षों बाद) पुरातत्व विभाग, चंडीगढ़ सर्कल की निदेशक का गई अतुल डालू कब हुई वह राज्य पुरातत्व विभाग की उपनिदेशक कांगई भट्टाचार्य के नेतृत्व में खुदाई कार्य 25 मार्च 2025 से शुरू हो चुका है।

8. महत्व/विरासतः–

1. ऐतिहासिक व पुरातात्विक महत्वः

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि अग्रोहा ऐतिहासिक रूप से एक समृद्ध नगर रहा है तथा इसका इतिहास प्राचीन व समृद्ध रहा है। प्राचीन थेह से प्रप्त इसकी वस्तुओं/अवशेषों से पुरातत्वविदों में इसमें एक विशेष दिलचस्पी जागी है। वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण व हरियाणा पुरातत्व सर्वेक्षण के संयोग से जो खुदाई कार्य चल रहा है उससे अग्रोहा का ओर अधिक व स्पष्ट ऐतिहासिक महत्व उजागर होगा। पुरातात्विक महत्व की वस्तुएं बहुत ही रोचक व संवेदनशील हैं।

2. धार्मिक व सांस्कृतिक महत्वः–

अग्रोहा ऐतिहासिक काल से ही धार्मिक महत्व का नगर रहा है। यहां बौद्ध, जैन, सनातन तीनों ही धर्म की गतिविधियों का समन्वय केंद्र दिखलाई पड़ता है। वर्तमान में भी अग्रोहा धाम के रूप में अग्रोहा एक पवित्र व धार्मिक आस्था का केंद्र बन चुका है जहां न केवल भारत भर से बल्कि विश्व से भी श्रद्धालु आते हैं। यहां होने वाले समारोह व त्यौहार अथवा एक विशिष्ट महत्व रखते हैं।

3. सामाजिक महत्वः–

अग्रोहा वैसे तो विशेष तौर पर अग्रवाल समुदाय की जन्मभूमि के रूप में प्रसिद्ध है लेकिन अग्रोहा में केवल एक जाति के लोग नहीं रहते साथ में अग्रोहा में केवल अग्रवाल समुदाय के पर्यटक नहीं आते बल्कि सभी समुदायों के लोग इसे एक पवित्र स्थल के रूप में भ्रमण के लिए आते हैं। इसलिए यह स्थल सामाजिक सौहार्द व भाईचारे का केंद्र बन चुका है।

4. आर्थिक व पर्यटक पर्यटन महत्व:–

अग्रोहा का दिन–प्रतिदिन आर्थिक महत्व बढ़ता जा रहा है। न केवल मेडिकल कॉलेज व अस्पताल होने के कारण बल्कि अग्रोहा धाम परिसर के कारण बहुत से लोगों को रोजगार मिलता है। हरियाणा सरकार अमरोहा को एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल के तौर पर विकसित करने की योजना बना रहा है ताकि यहां संग्रहालय स्थापित हो सके जिसमें अग्रोहा के टीले से प्राप्त वस्तुओं को रखा जा सके। अग्रोहा के अंदर न केवल भारत बल्कि विश्व धरोहर के रूप में बनने की क्षमता रखता है। ऐसा होने से न केवल हरियाणा सरकार के राजस्व में वृद्धि होगी बल्कि अग्रोहा के नौजवानों तथा स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा तथा मिल भी रहा है।

9. निष्कर्ष :–

इस प्रकार अग्रोहा शहर से जुड़े सारे पहलुओं का विश्लेषण करने के पश्चात निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि अग्रोहा का इतिहास प्राचीन व्यापार, राज्य, संस्कृति और धर्म का एक अनूठा संगम है। यहां की खुदाई से मिले अवशेष और कथाएं ऐतिहासिक व धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाती हैं। वर्तमान में खुदाई का कार्य उत्साह पूर्ण चल रहे है जिसकी रिपोर्ट आने के बाद बेहतर निष्कर्ष की उम्मीद है तथा प्रमाणिक तथ्यों के आधार पर इसकी महत्वता और पहचान सफल तरीके से उजागर हो सकेगी। वर्तमान अग्रोहा भारतीय पीढ़ी को महत्वपूर्ण संदेश व प्रेरणा देता है न केवल इसकी प्रचलित समृद्ध मान्यताएं तथा महाराजा अग्रसेन के मूल मूल्य आदर्श/सिद्धांत पूर्ण विश्व में अनूठे हैं बल्कि इसकी ऐतिहासिकता भी उतनी ही समृद्ध तथा प्रेरणा स्रोत है। यह भारत की एक ऐसी अनोखी विरासत बनकर उभरने की राह पर है जहां धर्म के साथ–साथ इतिहास के भी दर्शन होते हैं। महाराजा अग्रसेन केवल एक व्यक्ति/मानवमात्र नहीं बल्कि एक विचारधारा है एक ऐसी विचारधारा जो यूरोपीय/पाश्चात्य जगत के पूंजीवाद व समाजवाद जिसकी अपनी–अपनी सीमाएं हैं, उनके समक्ष महाराजा अग्रसेन की विचारधारा ज्यादा सार्थक वह प्रासंगिक नजर आती है। जो वर्ग संघर्ष पर नहीं बल्कि समन्वय और सहयोग पर टिकी है जो मेहनत वह शोषण व ईमानदारी से पूंजी प्राप्त करने, दान करने तथा दूसरों की उचित सहायता करने जैसे मानवीय सिद्धांतों का जोड़ है। यह विचारधारा एक भेदभाव रहित समाज के गठन तथा उसके विकास पर जोर देता है जहां धार्मिक संकीर्णता नहीं बल्कि सौहार्द, सहयोग तथा भाईचारे की भावना सबसे ऊपर है। भले ही आमजन की भावनाओं तथा संवेदनाओं को तर्क/तथ्य की कसौटी पर पूरी तरह से नहीं कसा जा सकता लेकिन जो संवेदना समाज को जोड़ने का कार्य करती हो व एक नई दिशा दिखाती हो उससे न केवल भारत को बल्कि विश्व को भी प्रेरणा मिल सकती है। सचमुच अग्रोहा इतिहास और पौराणिकता का अद्भुत संगम है। भारत की ही नहीं बल्कि विश्व की एक अनमोल राष्ट्रीय धरोहर के रूप में विकसित होने की संभावना है। जब इसका व्यापक विस्तृत उत्खनन हो जायेगातब वह दिन दूर नहीं यह व्यापक ये स्थान अपनी अनौखी परम्परा के लिए पूरे भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में भी ख्याति प्राप्त कर लेगा। अग्रोहा अग्रवाल समुदाय के लिए एक पवित्र व पावन स्थल है और भारत व हरियाणा के गौरवशाली इतिहास व विरासत का प्रतिनिधित्व करता हैं। वैभवशाली व संपन्न रह चुके इस नगर की इस पवित्र भूमि के वर्ष मे एक बार दर्शन अवश्य करने चाहिए तथा इस पावन भूमि की रज को मस्तक पर लगाकर एक अदभूत शांति व ऐतिहासिकता की अनुभूति कर सकते हैं तथा अग्रसेन जी के आदर्शों व इसकी ऐतिहासिक विरासत को बकरार रखकर व अपनाकर देश व समाज की सेवा कर सकते है तथा आने वाले समय में यह एक शानदार पर्यटक स्थल के रूप में तो महत्ता व पहचान तो प्राप्त करेगा ही साथ में नये शोध के रास्ते खुलेंगे व शोधार्थियों के लिए कार्य आसान बनायेगा तथा यह शोध पत्र भी अग्रोहा के इतिहास को समझने उसकी लोकधारा के जानने तथा उनका अवलोकन कर प्रयास की उसी दिशा में एक कदम है। अग्रोहा राजनीतिक गणतांत्रिक शासन प्रणाली सांस्कतिक आर्थिक व व्यापारिक धार्मिक और सामाजिक दष्टि से एक समद्ध नगर था और वर्तमान में भी अग्रोहा हर दष्टिकोण से दिन दुगनी रात चौगुनी की गति से विकास कर रहा हैं तथा इसका ऐतिहासिक व पर्यटन स्थल के रूप में महत्व बढ़ता जा रहा हैं।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह, डॉ० महेन्द्र, ***शोध–पत्र–एक ऐतिहासिक विश्लेषण,*** पृ. सं. 1 वही, पृ. 2
3. सी०टी० रोजर्ज, ***द रिवाइड लिस्ट ऑफ आबजैक्ट ऑफ आर्कियोलोजिकल इस्टेस इन पंजाब,*** लाहौर, 1823, पृ. सं. 71
4. एच०एल० श्रीवास्तव, ***एक्सकैवेशन एट अग्रोहा,*** आर्कियोलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1952, पृ. सं. 2
5. महाभारत, वनपर्व–255.20, ***महान रोहित कामेव आग्रेयान मालवालपि गणराज्य***
6. श्रीवास्तव, के०सी०, ***प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति,*** इलाहाबाद, 2018–19, पृ. सं. 115 वही, पृ.सं. 115
8. रिजडेविडस कृत, ***बुद्धिस्ट इंडिया,*** लन्दन, 1916, पृ. सं. 13–14
9. सिंह, डॉ० महेन्द्र, ***हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति,*** नई दिल्ली, 2023, पृ. सं. 82
10. रिजडेविडस कृत, ***बुद्धिस्ट इंडिया,*** लन्दन, 1916, पृ.सं. 13–14
11. यादव, डॉ० के०सी०, ***हरियाणा का इतिहास (आदिकाल से 1966 तक),*** दिल्ली, 2012, पृ. सं. 99 वही
13. अहमद, डॉ० एजाज, ***हरियाणा का इतिहास,*** नई दिल्ली, 2016,
14. यादव, डॉ० के०सी०, ***हरियाणा का इतिहास (आदिकाल से 1966 तक),*** दिल्ली, 2012, पृ. सं. 99
15. वही
16. अहमद, डॉ० एजाज, ***हरियाणा का इतिहास,*** नई दिल्ली, 2016, पृ. सं. 55–56
17. सी०टी० रोजर्ज, ***वही,*** पृ. सं. 71–72
18. एच०एल० श्रीवास्तव, ***वही,*** पृ. सं. 11
19. अहमद, डॉ० एजाज, ***हरियाणा का इतिहास,*** नई दिल्ली, 2016, पृ. सं. 57–58
20. अग्रवाल, वासुदेव शख, ***पाणिनी कालीन भारतवर्ष,*** आगरा, 1988, पृ.सं. 6–7
21. उपरोक्त
22. यादव, डॉ० के०सी०, ***हरियाणा का इतिहास (आदिकाल से 1966 तक),*** दिल्ली, 2012, पृ. सं. 104–105 वही
24. श्रीवास्तव, के०सी०, ***सिकन्दर का आक्रमण और भारत,*** दिल्ली, 2018–19, वही
26. यादव, डॉ० के०सी०, ***हरियाणा का इतिहास (आदिकाल से 1966 तक),*** दिल्ली, 2012, पृ. सं. 104–105
27. विश्वानाथ, ***इन ऐसिएंट इण्डिया,*** दिल्ली, 1962, पृ. 329
28. एच०एल० श्रीवास्तव, ***वही,*** पृ. सं. 11
29. यादव, डॉ० के०सी०, ***हरियाणा का इतिहास (आदिकाल से 1966 तक),*** दिल्ली, 2012, पृ. सं. 104–105
30. सिंह, डॉ० महेन्द्र, ***शोध–पत्र–एक ऐतिहासिक विश्लेषण,*** पृ. सं. 6–7